International Multilingual Research Journal

UGC Approved Refereed Journal

Jr.No.62759

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Issue-19, Vol-06, July to Sept.2017

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012
ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता

UGC Approved
Sr.No62759

July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

|| Index ||

1) A Comparative Analysis on Designing Information of Garment Manufacturing Units.....
Dr. Rachana Agrawal—Dr. Bhavana Sharma, Jabalpur (MP) || 10

2) ANALYSING AND UNDERSTANDING THE ROLE OF EMOTIONAL INTELLIGENCE IN....
Sankar Kar, West Bengal, India || 13

3) Characteristics of Natural Fibres Reinforced Concrete with Manufactured Sand
Dr. Rajendra P. Mogre—Dr. D. N. Shingade—Mayur Mogre || 19

4) BIBLIOMETRICS STUDY OF PHD THESES OF CHEMISTRY IN BHU DURING THE PERIOD..
Mr. Akhilesh Kumar Varma—Dr. Kunwar Singh || 26

5) A Study of Career Maturity of Higher Secondary Students
Ms. Ravinder Pal Kaur Assi—Dr. Indira Shukla, Mumbai. || 30

6) A STUDY ON IMPACT OF MERGER & ACQUISITION ON FINANCIAL PERFORMANCE IN....
Dharti P. Rami, Vallabh Vidhyanagar || 36

7) GEOGRAPHICAL DETERMINANTS OF MALARIA IN UNION TERRITORY OF DADRA AND....
Mahendra K. Mahajan—Dr. Suresh K. Shelar || 41

8) Study Of NLO Properties Of Grown Copper Tartrate Crystals By Single....
D. V. Sonawane—S. J. Nandre—R. R. Ahire, Maharashtra || 47

9) राजकीय सहभागातून महिला सबलीकरण
प्रा. डॉ. जे. जे. जाधव, चिखली जि. बुलडाणा || 53

10) दहशतवाद : एक मानवनिर्मित आपत्ती
प्रा.डॉ.राजू भागाजी वनारसे, सोयगाव, जि. औरंगाबाद || 56

11) मर्ढेकरांची कविता
प्रा. मोहन सोनूरकर, वर्धा || 59

12) माध्यमिक शाळांतील विद्यार्थ्यांच्या भावनिक बुध्दिमत्ता विकासावरील सहकार्यात्मक अध्ययन..
श्री. परेश फर्डे—डॉ. जाधव के. आर, मुंबई || 64

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

26) हरिदासी सम्प्रदाय में श्रीराधा का स्वरूप
डॉ. जुगल किशोर कुजूर, जिला– सरगुजा छ०ग० || 122

27) समाजवाद का वैश्विक योगदान
डॉ० अर्चना लोहनी || 125

28) डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविता में उपदेशात्मक चिंतन
प्रा. माधव आर. मुंडकर, इचलकरंजी। || 127

29) भक्ति की प्रतिष्ठा और रामचरितमानस
डॉ. ओम प्रकाश नारायण द्विवेदी, जम्मू || 129

30) राम और रामायण:पौराणिक मिथक और संरचित वास्तविकता
अनुराग कुमार पाण्डेय, वाराणसी (उ.प्र.) || 133

31) लोक जीवन और मड़ई
श्री युगेश देशमुख–डॉ. श्रीमती दुर्गा शुक्ला, दुर्ग (छ.ग.) || 139

32) शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत योग शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों मे ----
डॉ. वर्षा त्रिपाठी, विदिशा || 141

33) भारत में महिला हिंसा रोकने में नारी संगठन की भूमिका
डॉ० गौरव त्रिपाठी, लालगंज, मीरजापुर (उ०प्र०) || 145

34) विधिक एवं आर्थिक योगदान का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव
डॉ. श्रीमती किरण तिवारी, दुर्ग छ.ग. || 148

35) आदिवासी समाज और वैश्वीकरण
कु०रेशू सिंह–डॉ० सुशील कुमार सिंह, जिला:–जौनपुर (उ०प्र०) || 151

36) भारत में नक्सलवाद: राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु चुनौतियाँ एवं प्रत्युत्तर
डॉ० शिव पूजन, आगरा || 153

37) पुत्र–पुत्री के बीच पीसता मातृत्व
डॉ नाझीमा आर शेख, हिम्मतनगर || 155

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

26

हरिदासी सम्प्रदाय में श्रीराधा का स्वरूप

डॉ. जुगल किशोर कुजूर
सहा०प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय श्यामा प्र०मुखर्जी महा०
सीतापुर, जिला— सरगुजा छ०ग०

सारांश—

हरिदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी हरिदास जी ही हैं। स्वामी हरिदास जी राधा कश्ष्ण की युगल मूर्ति की उपासना का सखी भाव से प्रचार किया। श्रीराधा कृष्ण की लीलाओं का अवलोकन ये सखी भाव से किया करते थे। स्वामी हरिदास जी की श्रीराधा रूप की राशि हैं, सौन्दर्य की अधिष्ठात्री हैं। उनका रूप प्रतिपल परिवर्द्धमान है। नित्य नूतन होने वाला रूप ही वास्तव में रमणीय है। ये न शक्ति हैं और न अघटित घटन पटीयसी, बस इनके रूप सौन्दर्य एवं गुण ही अद्भुत हैं। गात की गोराई ऐसी मानों बारह बानी सोने को खूब तपाया गया हो और उसमें कपूर, कस्तुरी, कुंकुम का मिश्रण कर दिया हो। पल—पल परिवर्द्धमान छवि वाला मुख ऐसा लगता है, जिसे कोटि—कोटि कलाधर कहीं छिपायें हों, जो एक के बाद एक प्रकाशित हो रहे हों। स्वामी हरिदास जी ने श्रीराधा के इस नित्य नव रूप का चित्रण बहुत ही सुन्दर रीति से किया है।

अनन्य रसिक शिरोमणि श्रीस्वामी हरिदास जी की नित्य विहारिणी 'श्रीराधा' का स्वरूप बिल्कुल भिन्न है। श्रीराधा न तो रावल या बरसाने में वृषभानु गोप के यहाँ अवतरित होती हैं। वे अजन्मा हैं। नित्य किशोरी हैं। वे न स्वकीया हैं, न परकीया क्योंकि इन दोनों को नित्यविहार का सुख दुर्लभ है। स्वकीया को प्रियतम का साहचर्य तो प्राप्त है पर घर के कामकाज और गुरूजनों की मर्यादा का ध्यान रखना पड़ता है। परकीया के लुकाछिपी के मिलन में उत्साह और उल्लास तो बहुत है परन्तु भय और वर्जनाएँ भी कम नहीं। घाट—बाट पर दर्शन—मिलन हो पाता है। उनमें वह सुख—सुहाग और सुकुमारता कहाँ जो कुंजविहारिणी लाड़िली 'राधा' में है।

हरिदास सम्प्रदाय में राधा और कृष्ण की युगल साधना सरसभाव से की गई है। तानसेन के गुरू रहे स्वामी हरिदास जिन्होंने वृंदावन स्थित विहारी के विग्रह को प्रकट किया, स्वामी जी अनुसार किशोरी राधा कृष्ण की स्वामिनी, अनिंद्य सुन्दरी तथा कृष्ण के आकर्षण का केन्द्र हैं। ब्रज की रस प्रथा भाव की लीला की अभिव्यक्ति के दो स्वरूप हैं, एक ब्रजेंद्रनंदन तथा दूसरी ओर वृषभानु दुलारी राधा। कृष्ण रसमय हैं तो राधा भावमयी।

श्रीराधा प्रेम की वह कल्पलता हैं जो प्रियतम कृष्ण के चरणों में पूर्ण समर्पित हैं। स्वामी हरिदास की श्रीराधा दिव्य, अनंत, अखण्ड सौंदर्य की स्वामिनी हैं। श्रीराधा दिव्य चिन्मय प्रेमस्वरूपा हैं, तो श्रीकृष्ण चिन्मय आनन्दस्वरूप हैं। माना गया है कि इस सृष्टि की रचना भगवान ने स्वयं पुरूष और प्रकृति बनकर की है। पुरूष माना गया श्रीकृष्ण को, प्रकृति रूप हैं श्रीराधा। प्रकृति ही भगवान की आज्ञा से सृष्टि निर्माण में पांच स्वरूपों में प्रकट स्वरूपों में प्रकट हुई। ये स्वरूप हैं दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री तथा राधा सनातन धर्म के अनुसार समस्त नारी शक्ति में इन पांच शक्तियों का अंश है। राधोपनिषद् में राधा शब्द के अर्थ हैं आराधना करने वाली। जो सदैव श्रीकृष्ण की आराधना में रहे वह हैं। सभी देवियों में सबसे सुंदर हैं। सभी गुण सदैव उनमें विराजमान रहते हैं। वे परम सौभाग्यवती हैं। गोलोक धाम में रहने वाली ये देवी रासेश्वरी नाम से प्रसिद्ध हैं। गोपी वेश में विराजती हैं। भक्तों पर कृपा करने के लिए अवतार धारण करती हैं। करोड़ों चन्द्रमाओं के समान प्रकाशमान इनकी कांति है। श्रीवृषभान के घर पुत्री रूप में पधारकर, अपने चरण कमलों के स्पर्श से इन्होंने पृथ्वी को परम पवित्र बना दिया है ब्रम्हा और शिव भी जिनका पार नहीं पा सके, वे वृन्दावन में प्रकट हुई हैं। किन्तु वृन्दावन, बरसाने एवं स्वामी

Scanned with CamScanner

हरिदास की राधा का अपना अलग ही महत्व है। 'श्रीराधा' यहाँ के लोगों की ऐसी आराध्या हैं कि उनके शिष्टाचार का संबोधन ही 'राधे–राधे' बन गया है।

डॉ. श्री शशिभूषण दास ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "श्रीराधा का क्रम विकास" में लिखा है "लगता है कि स्वामी हरिदास स्वयं चैतन्य सम्प्रदाय के न होने पर भी चैतन्य सम्प्रदाय से और उसके अन्दर से चैतन्यमत से सुपरिचित थे और बहुत सम्भव है कि उनके अनन्य शरण होकर नियम व्रतादि का परिहार करके केवल सखीभाव से युगल लीला आस्वादन की साधना में चैतन्यमत का प्रभाव था।"

स्वामी हरिदास जी ने जिस रसमूर्ति को उपास्य माना है वह साधारण से अनेक अंशों में विलक्षण है। उनका उपास्य जन्म, कर्म, काल, स्वभाव आदि से सर्वथा मुक्त नित्य वस्तु है। उनका सिद्धांत है कि वह रस तो सहज जोरी के रूप में अनाद्यनन्त है। भूत, वर्तमान या भविष्य किसी एक काल में उसकी विद्यमानता मानना उचित नहीं है। वह सहज जोरी (श्यामाश्याम) तो पहले भी थी, अब भी है, और आगे भी रहेगी। वह सहज जोरी अपने मूल स्वरूप में कभी जन्म नहीं लेती अपितु जब उसकी किसी रसिक जन पर कश्पा होती है, जोरी सहज ही प्रकट हो जाती है। उसी सदा समवयस्क युगल का दर्शन स्वामी हरिदास को हुआ है–

"माई री, सहज जोरी प्रगट भई,
जुग रंग की गौर–स्याम घन–दामिनी जैसैं।
प्रथम हूँ हुती, अब हूँ आगे हूँ रहिहै, न टरिहै तैसे।"

केलिमाल, स्वामी हरिदास कृत,
(पद संख्या–१)

यह अवतारकालीन राधाकश्ष्ण की जोड़ी नहीं है, अपितु विश्व–गर्भ के केन्द्र, नित्य वृन्दावन धाम में, अपने सौन्दर्य–माधुर्य के कारण यह जोड़ी नित्य केलिरत हैं। यह जोड़ी माया–काल से परे हैं। वहाँ इनके नित्य लीला–रस के अतिरिक्त–शान्त, दास्य, साख्य, वात्सल्य आदि किसी रस का प्रवेश नहीं। स्वामी हरिदास की उपास्या राधा का स्वरूप ब्रज लीला की सर्वसामान्य राधा से सर्वथा भिन्न है। ब्रज के भक्त कवियों ने राधा को सर्वथा पाथने वाली या पानी ढोने वाली नारियों का चित्रण किया है, वह तो सामान्य ही हैं, बिहारिनदास की उपास्या राधिका तो नित्य सुहागिनि रानी हैं, जो सेवा तो दूर, उसकी सेवा किये जाने पर भी लाड़िली बोलने में भी अलसाती हैं–

"कोऊ गोबर पाथनी, कोऊ ढोवै पानि।
कोऊ सुहागिन लाडिली, बोलत हू अलसानि।।"

स्पष्ट है कि ब्रजलीला की राधिका से या विद्यापति की राधा से स्वामी हरिदास जी की राधा पूर्णत: भिन्न हैं। नित्यविहारिणी राधा कारणस्वरूप हैं, विशुद्ध प्रेमरूपा हैं। ब्रज की राधा इनका अंशमात्र हैं। श्रीबिहारिनदास अपनी राधा को सर्वोपरि मानते हैं। अन्य कोई राधा उनकी समता नहीं कर सकती। यद्यपि नाम– माहात्म्य के कारण अन्य ब्रज की राधा के प्रति भी वे श्रद्धा रखते हैं, परन्तु ब्रज की राधा का जन्म वयस आदि की लीलाएँ नित्यविहार– रस में बाधक हैं। यहाँ तो अंग–संग रहने वाले नवल किशोर और किशोरी एक वयस हैं। वास्तव में नित्यविहारिणी राधा अजन्मा हैं, नित्य किशोरी हैं, सदैव एकरस हैं।

स्वामी हरिदास जी की उपासना का मूल आधार नित्यविहार है। यह नित्यविहार प्रेम रस का अपार समुद्र है, जहाँ काम–केलि अर्थात् श्रृंगार– लीलाओं के अतिरिक्त किसी और रस का स्पर्श भी नहीं है, नित्य रूप में नव यौवन से युक्त श्री किशोर और किशोरी श्री राधा एक दूसरे के कंठ के श्रृंगार हैं। यह नित्यविहार रस सबसे दूर और दुर्लभ है, वह सुकुमार–रस को सुलभ कैसे हो सकता है। श्री स्वामी हरिदास जी की उपास्या श्रीराधा निर्गुण और सगुण दोनों से परे हैं, वे अवतार नहीं, अवतारी हैं।

यह नित्यविहार रस प्रेम–रस है इस प्रेम– रस में किसी अन्य रस का मिलावट नहीं है। यह विशुद्ध श्रृंगार, शांत, दास्य, साख्य, वात्सल्य और ब्रज के श्रृंगार से भी परे अत्यन्त सूक्ष्म रस है। स्वामी हरिदास जी के श्यामा–श्याम इस रस के दो स्वरूप हैं और इनकी नित्य निरन्तर सम्पन्न होने वाली लीला से रस निष्पन्न होता है। ये श्यामा–श्याम सौन्दर्य और माधुर्य के दो अनन्त स्रोत हैं। इनकी लीला अक्षुण्ण है। ये श्यामा–श्याम न किसी के पुत्र हैं, न किसी के भाई। ये तो नित्य तत्व हैं। नित्य लीलामय है। केवल

Scanned with CamScanner

रस—रूप, और प्रिया—प्रियतम की इच्छा स्वरूपा सहचरियाँ ही रस—धाम वृन्दावन धाम में नित्य लीलारत हैं। इनकी यह नित्य लीला ही नित्यविहार है। उपासक इसी नित्यविहार में सखी—भाव से प्रवेश पाना अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। यह वह रसात्मक स्थिति है, जो बड़े—बड़े योगीन्द्र को भी दुर्लभ है।

स्वामी हरिदास जी की राधा गुणों में वे सबकी सिरमौर हैं। यदि रोम—रोम रसना बन जाय तो भी बिहारी उनके गुणों का बखान नहीं कर पाते। उनका यश कोटि ब्रह्मण्डों में विराजमान है। जब श्रीकुंजबिहारी और वृन्दावन के मोरों में नृत्य की होड़ होती है तो वे ही मध्यस्थता करती हैं। इन्हीं कारणों से रसिक चूड़ामणि इतने आसक्त हैं कि—

"जहाँ—जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरी
तहाँ तहाँ मन मेरौ
करत किरत परछाँहीं।"

केलिमाल, स्वामी हरिदास कृत,
(राग कल्यान—१) पद संख्या—५३

स्वामी हरिदास जी की परम्परा में श्यामसुन्दर के पुराण—प्रसिद्ध नामों का प्रयोग न होकर श्याम, बिहारी, लाल आदि अभिधानों का उल्लेख मिलता है क्योंकि वे पौराणिक श्रीकृष्ण से भिन्न हैं। किन्तु श्रीश्यामा के लिए राधा नाम का प्रयोग प्रचुरता से हुआ है। इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि यह नाम बड़ा अभिव्यंजनापूर्ण और गूढ़ अर्थों से भरा है। दूसरे 'राधा' नाम में फिर भी स्वामी श्रीबिहारिनदास जी ने स्पष्ट कहा है कि यद्यपि अन्य सभी सम्प्रदायों में राधा नाम और उनके माहात्म्य की सेवा है किन्तु स्वामी जी की श्रीराधा की समानता कोई नहीं कर सकता। स्वामी जी की राधा नित्य नवल किशोरी हैं। वे न साधारण (स्वकीया) हैं और न व्यभिचारिणी (परकीया)। अनुराग—विहार में सदा जाग्रत रहती हैं, पलभर भी नहीं सोती।

स्वामी हरिदास की रचना "श्री केलिमाल" विशुद्ध नित्यविहार रसोपासना का अग्रदूत और रस —ग्रंथों का अग्रज है। इसी में सर्वप्रथम श्री श्यामा —श्याम की जोड़ी को 'सहज' बताया गया जो अनाद्यन्त रूप—वयस सभी में समान है। स्वकीया—परकीया, आराध्य—आराधिका आदि सभी सम्बन्धों से मुक्त ये दोनों एक प्राण दो देह हैं। ब्रज—वृन्दावन के अन्य रसों से संबंधित एक भी नाम का प्रयोग श्री केलिमाल में नहीं है, लीला तो दूर की बात है। श्री श्यामसुन्दर की जैसी आसक्ति और अधीनता, प्रियतमा की जितनी उदारता, गम्भीर प्रीति—प्रणवता, युगल की नागरता, संगीत—प्रवीणता, अनन्य प्रेम, रस—रीति का सर्वप्रथम चित्रण 'केलिमाल' में ही उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र नहीं।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि नित्य केलि के विधायक श्री श्यामा—श्याम, वृन्दावन और सखी सभी का स्वरूप पौराणिक परम्परा से प्राप्त श्री बृषभानुनंदिनी, नन्दनन्दन, वृन्दावन और सखियों से भिन्न है। यहाँ श्रीकृष्ण भगवान अथवा श्री राधा परम शक्ति स्वरूपा नहीं हैं, अपितु एक ही प्रेम की दो परिणतियाँ हैं। सखी और वृन्दावन भी प्रेम के ही रूप हैं। इन सभी का प्रेम तत्सुख सुखमय है। यहाँ कुंजबिहारी के महान् ऐश्वर्य का चमत्कार चित्रित नहीं किया गया, उनके माधुर्य का मोहक रूप ही अंकित है। इस सम्प्रदाय में राधा और कृष्ण को सदैव युगल रूपों में कुंजों में नित्य विहार करते देखा गया है। इस प्रकार स्वामी श्री हरिदास जी की नित्य विहारिणी श्रीराधा का स्वरूप बिल्कुल भिन्न और विलक्षण है।

संदर्भ सूची

१. श्री राधा का क्रम विकास—डॉ. शशिभूषण दास गुप्त
२. केलिमाल—स्वामी हरिदास जी
३. बिहारिनदास जी की साखी।
४. भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा—पं. बलदेव उपाध्याय

❑❑❑

Scanned with CamScanner

UGC Approved Journal list_ View Details_
https://goo.gl/FC52UM

Clarification

Respected Authors & sensitive Readers

kindly we have to inform you that we have published research journal named VIDYAWARTA whose ISSN No is 2319 9318 but in the UGC website the vidhyawartha which is incorrect. (ugc listed Journal no. 62759) we have mentioned correct spelling Vidyawarta as allotted from respected Government authority. We are already sending request to UGC about correction the name.

Kindly request you to please find our Journal by ISSN 2319 9318.

The Journal named Vidyawarta is being published in India only by us. Because we got Registered Trademark by Intellectual Property Department of India. Our Trademark authority certificate is available at Government website.

Edit By
Dr. Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath, Dist.Beed 431 515
(Maharashtra, India)
Cell : +91 75 88 05 76 95

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra)

ISSN-2319 9318

₹ 300/-

Scanned with CamScanner